ISSN: 3048-9423(Online)
Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS)
© NIJMS | Vol. 1 | Issue 4 | Feb-Mar 2025
Available online at: https://nijms.com/

तुलसीदास जी के साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा

डॉ० निधि छाबड़ा

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अगस्त्यमुनि (रुद्रप्रयाग)

corresponding author Emai: *nidhichhabra0507@gmail.com*

शोध सारांश

तुलसीदास जी भारतीय साहित्य के अनमोल रत्न हैं। उनके द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस ने जन-जन के मन को छुआ है। उनके साहित्य से भारतीय ज्ञान परंपरा और अधिक समृद्ध हुई है। भारतवर्ष में अनेक साहित्यकार हुए हैं, परंतु तुलसीदास द्वारा रचित साहित्य सामाजिक चेतना और भक्ति-भावना के साथ-साथ आम जनमानस को भी जोड़ता है। तुलसीदास को लोकनायक भी कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में आपसी समन्वय और सद्भावना को बढ़ावा दिया तथा लोक कल्याण पर विशेष ध्यान दिया। उनके साहित्य की भाषा उस समय के आम-जनमानस की भाषा थी। तुलसीदास जी ने भगवान श्रीराम को अपने इष्ट देव के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने अपने साहित्य में श्रीराम को आदर्श मानव, आदर्श राजा, आदर्श पति, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श वीर, आदर्श पिता के रूप में दर्शाकर भगवान श्रीराम के आदर्शों और गुणों का पालन करने के महत्व पर बल दिया है। तुलसीदास जी ने अपने साहित्य में भारतीय संस्कृति के सार्वभौमिक मूल्यों को समाहित किया है। निःसंदेह तुलसीदास जी का साहित्य हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भक्ति, संस्कार, नैतिकता, सामाजिक चेतना, मानवीय मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन करने में पूर्ण समर्थ है।

बीज शब्द: *सामाजिक चेतना, लोकनायक, लोक कल्याण, सार्वभौमिक मूल्य।*

परिचय-

गोस्वामी तुलसीदास जी (1532-1623 ई.) भारतीय साहित्य के महानतम कवियों में से एक हैं। उनके काव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का समग्र रूप दिखाई देता है। तुलसी का साहित्य केवल धार्मिक रचना नहीं है, बल्कि यह भारतीय दर्शन, संस्कृति, नीति, और जीवन मूल्यों का एक विस्तृत संकलन है। तुलसी की समन्वयवादी सोच केवल एक दार्शनिक प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा की गहरी समझ का परिणाम है। उन्होंने यह समझा था कि सत्य एक है, लेकिन उसकी अभिव्यक्ति अनेक रूपों में होती है। इसीलिए उन्होंने शैव, वैष्णव, शाक्त आदि विभिन्न संप्रदायों के बीच सेतु का काम किया है।

तुलसी का समन्वयवाद केवल सैद्धांतिक नहीं है, बल्कि व्यावहारिक भी है। उन्होंने दिखाया कि ज्ञान, भक्ति और कर्म - तीनों मार्गों को एक साथ अपनाया जा सकता है। राम के चरित्र में उन्होंने ज्ञानी, भक्त और कर्मयोगी तीनों के गुण दिखाए हैं। यह समन्वय आज के बहुलतावादी समाज के लिए एक आदर्श मॉडल है।

उनका दृष्टिकोण न तो कट्टर है और न ही अनुदार। वे कहते हैं "मति कीन्हीं कछु भेद उपाधि। बिनु गुण धर्म न जाति अवाधि।।" तुलसीदास जी जी भक्तिकाल की रामकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। वे भारतीय साहित्य के अनमोल रत्न हैं। उनके द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस ने जन-जन के मन को स्पर्श किया है। उनके लिखे साहित्य से भारतीय ज्ञान परंपरा और अधिक समृद्ध हुई है। भारतीय परंपरा में मेहमान को ईश्वर का रूप कहा गया है। जिस प्रकार ईश्वर उसी को प्राप्त होते हैं, जो सच्चे मन से भक्ति भाव में लीन रहता है। उसी प्रकार से हमें भी मेहमान बनकर उसी घर में जाना चाहिए, जिस घर के लोगों में हमारे प्रति आदर प्रेम का भाव हो। भारतीय ज्ञान परंपरा में मधुर वाणी का विशेष महत्व है। मधुर वाणी शत्रु को भी मित्र बनाने में सक्षम है। मधुर वचन रिश्तों को मज़बूत बनाते हैं। तुलसीदास जी मधुर वचन बोलने के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं-

तुलसी मीठे बचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरण इक मंत्र है, परिहरु बचन कठोर।।

भारतीय ज्ञान परंपरा में माता-पिता और गुरु को ईश्वर के समान बताया गया है। गणेश भगवान ने तो स्वयं माता पार्वती और पिता शंकर की परिक्रमा करके पूरे संसार की परिक्रमा कर ली थी। इसलिए तुलसीदास जी कहते हैं कि माता-पिता और गुरु का सम्मान करने वाला जीवन में समस्त सुखों की प्राप्ति करता है-

मातु पिता गुरु स्वामि सिख, सिर धरि करहिं सुभाय।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर, नतरू जनम जग जाय।।

भारतीय ज्ञान परंपरा के आयाम

1. **वैदिक ज्ञान परंपरा का गहन प्रभाव**

तुलसीदास जी के साहित्य में वैदिक ज्ञान परंपरा का अत्यंत गहरा और व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने केवल वेदों का अध्ययन ही नहीं किया था, बल्कि वैदिक मंत्रों की गहरी भावना को समझकर उन्हें अपने काव्य का आधार बनाया है। वैदिक परंपरा में जिस प्रकार यज्ञ, दान, तप और स्वाध्याय को महत्व दिया गया है, उसी प्रकार तुलसी ने भी इन्हें अपने काव्य में प्रमुखता से स्थान दिया है। रामचरितमानस में तुलसी का यह कथन वैदिक ज्ञान की गहरी समझ को दर्शाता है:

"वेद पुरान संत मत एहू।
राम नाम नर कलपतरु केहू।।"

यहां तुलसी ने वेद, पुराण और संत मत की त्रिवेणी को दर्शाया है। यह केवल एक काव्यक्ति नहीं है, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा की समग्रता का प्रतीक है। वेदों में जिस परब्रह्म की चर्चा है, पुराणों में जिसकी लीलाओं का वर्णन है, और संतों ने जिसका प्रत्यक्ष अनुभव किया है, वह सब राम नाम में समाहित है।

तुलसी ने वैदिक मंत्र "सत्यं शिवं सुंदरम्" की भावना को राम के चरित्र में मूर्त रूप दिया है। राम उनके लिए केवल एक व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वैदिक सत्य के साकार रूप हैं। यही कारण है कि तुलसी कहते हैं "राम नाम नर कलपतरु केहू" - राम नाम मनुष्य के लिए कल्पवृक्ष के समान है, जो सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करता है।

2. उपनिषदीय दर्शन का सूक्ष्म विवेचन

तुलसी के काव्य में उपनिषदों का तत्वज्ञान न केवल स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, बल्कि उन्होंने इसे अपने जीवन दर्शन का मूल आधार बनाया है। उपनिषदों में जिस आत्मा-परमात्मा की एकता की चर्चा है, तुलसी ने उसे भक्ति की भावना से जोड़कर एक नया आयाम

दिया है। उनके अनुसार जीवात्मा और परमात्मा के बीच का संबंध केवल दार्शनिक चर्चा का विषय नहीं है, बल्कि प्रेम और भक्ति के माध्यम से अनुभव किया जाने वाला सत्य है।

"जो अवधि आवै सो सब माया।
जो निरवधि सो सत्य कहाया।।"

इस पंक्ति में तुलसी ने उपनिषदों के सत्-असत् विवेक को अत्यंत सरल भाषा में प्रस्तुत किया है। जो सीमाओं में बंधा है, वह माया है, और जो असीम है, वही सत्य है। यह उपनिषदों के "सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म" की प्रतिध्वनि है। ब्रह्म की सर्वव्यापकता के संदर्भ में तुलसी कहते हैं।

"सियाराम मय सब जग जानी।
करउं प्रनाम जोरि जुग पानी।।"

यहां वे उपनिषदों की "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" की भावना को व्यक्त करते हैं। उनके लिए संपूर्ण जगत सीताराम से भरा हुआ है, जो उपनिषदों के अद्वैत दर्शन का काव्यात्मक अभिव्यक्ति है।

3. गीता के कर्मयोग का व्यावहारिक रूपांतरण

भगवद्गीता के कर्मयोग का तुलसी के साहित्य पर अत्यंत गहरा प्रभाव है, लेकिन उन्होंने इसे केवल दार्शनिक सिद्धांत के रूप में नहीं लिया, बल्कि व्यावहारिक जीवन में उतारने योग्य मार्गदर्शन के रूप में प्रस्तुत किया है। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो निष्काम कर्म की शिक्षा दी थी, तुलसी ने उसे सामान्य जन के लिए सुलभ बनाया है।

"करम प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करै सो तस फल चाखा।।"

इस पंक्ति में तुलसी ने कर्म के सिद्धांत को स्पष्ट किया है। यह गीता के "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" का ही रूपांतरण है, लेकिन इसमें व्यावहारिकता का पुट है। तुलसी कहते हैं कि ईश्वर ने इस संसार को कर्म प्रधान बनाया है, और जैसा कर्म करेगा वैसा फल पाएगा। तुलसी का कर्मयोग केवल त्याग में नहीं है, बल्कि कर्तव्य निष्ठा में है। वे राम के चरित्र के माध्यम से दिखाते हैं कि कैसे एक आदर्श व्यक्ति अपने धर्म का पालन करते हुए कर्म करता है। राम का वनवास स्वीकार करना, सीता की रक्षा के लिए युद्ध करना, प्रजा के कल्याण के लिए कठोर निर्णय लेना - यह सब निष्काम कर्म के उदाहरण हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में कहा गया है कि परम ज्ञानी व्यक्ति भी यदि अहंकार के वशीभूत हो जाए तो उसका समस्त ज्ञान नष्ट हो जाता है। उसके कार्य ज्ञानवान व्यक्तियों के समान नहीं, वरन मूर्खों के समान होने लगते हैं। इसलिए तुलसीदास जी कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से दूर रहना चाहिए-

काम क्रोध मद लोभ की, जौ लौं मन में खान ।
तौ लौं पंडित मूरखों, तुलसी एक समान ।।

4. भक्ति परंपरा का समग्र स्वरूप

तुलसी की भक्ति परंपरा भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक अंग है। उन्होंने भक्ति को केवल एक धार्मिक अनुष्ठान न मानकर, जीवन जीने की एक पूर्ण पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया है। तुलसी की भक्ति में ज्ञान, कर्म और भक्ति का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने भक्ति के माध्यम से व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास का मार्ग दिखाया है।

"नवधा भगति कहउं तोहि पाहीं।
सावधान सुनु धरेहु मन माहीं।।"

तुलसी ने भक्ति के नौ रूपों का जो विस्तृत वर्णन किया है, वह भारतीय भक्ति परंपरा का एक व्यवस्थित सिद्धांत है। श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन - ये नौ प्रकार की भक्ति व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व को ढालने का माध्यम हैं। तुलसी की भक्ति में समर्पण की भावना है, लेकिन यह अंधा समर्पण नहीं है। वे विवेक और तर्क को भी भक्ति का अंग मानते हैं। उनकी भक्ति में दासता नहीं है, बल्कि प्रेम की मधुरता है। "राम सो बड़ो है कौन? मोसो कौन छोटो?" इस भावना में भक्त और भगवान के बीच प्रेम का संबंध है, भय का नहीं।

भक्ति के माध्यम से तुलसी ने सामाजिक क्रांति का भी सूत्रपात किया है। उन्होंने दिखाया कि भक्ति के द्वार सभी के लिए खुले हैं - चाहे वह निषाद हो, वानर हो, या कोई भी जाति का व्यक्ति हो। यह भारतीय समाज में एक नई चेतना का संचार था। जिस व्यक्ति को ईश्वर में विश्वास होता है, वह बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी विचलित नहीं होता। इसलिए तुलसीदास जी ने ईश्वर पर विश्वास करके जीवन में सदैव आनंदित रहने का संदेश दिया है-

तुलसी भरोसे राम के, निर्भय हो के सोए।
अनहोनी होनी नहीं, होनी हो सो होए।।

5. नैतिक मूल्य और जीवन आदर्श का विशद् प्रतिपादन

तुलसी के साहित्य में भारतीय नैतिक मूल्यों का जो संकलन मिलता है, वह केवल एक सैद्धांतिक प्रस्तुति नहीं है, बल्कि व्यावहारिक जीवन में अपनाए जाने योग्य मार्गदर्शन है। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से दिखाया है कि कैसे नैतिक मूल्यों को जीवन में उतारा जा सकता है। राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, भरत आदि पात्र केवल कहानी के चरित्र नहीं हैं, बल्कि आदर्श व्यक्तित्व के प्रतीक हैं।

सत्य और धर्म की सर्वोच्चता

"सत्य धर्म मम लोक रीती।
नित करउं करावउं नीती।।"

तुलसी ने सत्य और धर्म को राम के शासन का आधार बताया है। यहां वे दिखाते हैं कि व्यक्तिगत जीवन हो या सामाजिक व्यवस्था, सत्य और धर्म ही इसकी बुनियाद होनी चाहिए। राम का चरित्र इस बात का प्रमाण है कि सत्य के लिए व्यक्ति को कितनी भी कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े, उससे विचलित नहीं होना चाहिए।

दया और करुणा का महत्व

तुलसी के अनुसार दया केवल एक गुण नहीं है, बल्कि धर्म की जड़ है। बिना दया के कोई भी धार्मिक कृत्य निरर्थक है। वहीं अभिमान सभी पापों का मूल है। यह शिक्षा आज के स्वार्थी युग में और भी प्रासंगिक है। भारतीय ज्ञान परंपरा प्राणी मात्र पर दया करना भी सिखाती है। तुलसीदास जी ने तो दया को धर्म का मूल बताया है। उनके अनुसार दया को जीवन पर्यन्त नहीं छोड़ना चाहिए-

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया ना छोड़िए, जब तक घट में प्राण।।

भारतीय ज्ञान परंपरा में कहा गया है कि धैर्य बड़ी से बड़ी विपत्ति से पार पाने में सहायक है। धैर्यवान व्यक्ति ही जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। अधीर व्यक्ति मूर्खों के समान व्यवहार करता है। वह जरा से सुख में सुखी और जरा से दुख में बहुत दुखी हो जाता है। इसलिए तुलसीदास जी ने भी कहा है कि सदैव धीरज रखना चाहिए-

सुख हरसहि जड़ दुख विलखाहीं, दोउ सम धीर धरहि मन माही।
धीरज धरहू विवेक विचारी, छाड़ि सोच सकल हितकारी

गुरु की महिमा और ज्ञान परंपरा

"गुरु बिन ज्ञान न उपजै गुरु बिन मिलै न मोष।"

तुलसी ने भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा को अत्यंत महत्व दिया है। उनके अनुसार गुरु केवल शिक्षा देने वाला नहीं है, बल्कि शिष्य के व्यक्तित्व को गढ़ने वाला शिल्पकार है। बिना गुरु के न तो सच्चा ज्ञान मिल सकता है और न ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। यह भारतीय शिक्षा पद्धति का मूलभूत सिद्धांत है। भारतीय साहित्यकारों ने सदैव ही गुरु की महिमा पर बल दिया है। गुरु का स्थान माता-पिता और ईश्वर से भी ऊंचा रखा गया है। तुलसीदास जी का भी यही मत है कि जो व्यक्ति अपने गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलता है, उसका मंगल होना निश्चित है-

सहज सुहृद गुर स्वामि सिख, जो ना करइ सिर मानी।
सो पछिताई अघाइ उर, अवसि होई हित हानि।।

6. सामाजिक चेतना और सुधारवादी दृष्टिकोण

तुलसी के साहित्य में सामाजिक चेतना का जो प्रबल स्वर है, वह उन्हें अपने समय का एक महान सामाजिक चिंतक बनाता है। उन्होंने अपने युग की सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया है और एक न्यायसंगत समाज की स्थापना का मार्ग दिखाया है। तुलसी की सामाजिक चेतना केवल आलोचना में नहीं है, बल्कि रचनात्मक सुझावों में भी है। जाति-पाति के भेदभाव के विरुद्ध तुलसी का स्वर अत्यंत मुखर है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि भक्ति के मामले में कोई जातिगत भेदभाव नहीं होना चाहिए: "जाति पाति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई।। भगति हेतु हरि नाम लेइ। सकल मुदित मन कामना खेइ।।" यहां तुलसी कह रहे हैं कि भक्ति के सामने जाति, कुल, धन, बल आदि सभी छोटे पड़ जाते हैं।

तुलसी ने अपने काव्य में निषाद, केवट, शबरी जैसे तथाकथित निम्न जाति के लोगों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। यह केवल काव्यक्त नहीं है, बल्कि सामाजिक संदेश है कि भगवान के दरबार में सभी बराबर हैं। हनुमान जी का चरित्र भी इसी बात का प्रमाण है - वे वानर हैं, लेकिन राम के सबसे प्रिय भक्त हैं। तुलसी ने स्त्रियों के प्रति भी सम्मानजनक दृष्टिकोण अपनाया है। सीता का चरित्र आदर्श नारी का प्रतीक है, लेकिन वह दुर्बल नारी नहीं है। सीता में शक्ति और सहनशीलता दोनों हैं। "जो सुमिरै हरि हरि सो तेहि तारै" - यह उनका कथन स्त्री-पुरुष सभी के लिए समान रूप से लागू होता है।

7. व्यावहारिक ज्ञान और जीवन दर्शन

तुलसी का ज्ञान केवल आध्यात्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक जीवन की समस्याओं से गहरे जुड़ा हुआ है। उन्होंने जीवन की वास्तविकताओं को समझते हुए ऐसे समाधान प्रस्तुत किए हैं जो आम आदमी के काम आ सकें। तुलसी की व्यावहारिकता उनके आध्यात्मिक चिंतन को और भी मजबूत बनाती है।

"तुलसी साथी विपत्ति के विद्या विनय विवेक।
साहस सुकृति सुसत्यव्रत राम भरोसे एक।।"

इस दोहे में तुलसी ने जीवन की कठिनाइयों से निपटने के लिए सात मूलभूत गुणों की चर्चा की है। विद्या, विनय, विवेक, साहस, सुकृति, सत्यव्रत और राम पर भरोसा - ये सातों गुण मिलकर व्यक्ति को जीवन की हर परिस्थिति में सफल बनाते हैं।

विद्या केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं है, बल्कि जीवन को समझने की क्षमता है। विनय व्यक्तित्व में शालीनता लाती है, जबकि विवेक सही-गलत की पहचान कराता है। साहस कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति देता है, और सुकृति अच्छे कर्मों की प्रेरणा देती है। सत्यव्रत व्यक्ति को धर्म के मार्ग पर स्थिर रखता है, और राम पर भरोसा अंतिम सहारा है। तुलसी ने यह भी स्पष्ट किया है कि व्यावहारिक ज्ञान बिना आध्यात्मिक आधार के अधूरा है। "राम भरोसे एक" कहकर वे यह संदेश देते हैं कि सभी मानवीय प्रयासों के बाद भी अंततः ईश्वर पर भरोसा रखना पड़ता है। यह निष्क्रियता का संदेश नहीं है, बल्कि सक्रिय जीवन के साथ-साथ विनम्रता का संदेश है।

8. निष्कर्ष

तुलसीदास जी के साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का समग्र रूप दिखाई देता है। उन्होंने वैदिक ज्ञान से लेकर समकालीन सामाजिक चेतना तक सभी आयामों को अपने काव्य में समेटा है। उनका साहित्य न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करता है, बल्कि व्यावहारिक जीवन की समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत करता है। तुलसी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने गहन दार्शनिक सत्यों को सरल और बोधगम्य भाषा में प्रस्तुत किया है। उनका समन्वयवादी दृष्टिकोण और लोकमंगल की भावना आज भी प्रासंगिक है। आधुनिक युग की चुनौतियों के बीच तुलसी का साहित्य एक प्रकाश स्तंभ की तरह मार्गदर्शन करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] तुलसी ग्रंथावली, प्रथम खंड, सं०- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ 173

[2] तुलसी ग्रंथावली, द्वितीय खंड, सं०- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ 88

[3] तुलसी ग्रंथावली, प्रथम खंड, सं०- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ 287

[4] तुलसी ग्रंथावली, द्वितीय खंड, सं०- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ 89

[5] तुलसी ग्रंथावली, प्रथम खंड, सं०- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ 268

[6] लोढ़ा, के. एम. (1978). *तुलसी और भारतीय ज्ञान परंपरा*. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.

[7] गुप्ता, पी. (2015). रामचरितमानस में योग दर्शन. *जेएनयू शोध पत्रिका*, *12*(3), 78-95.

[8] जैन, एन. (1978). तुलसी काव्य में वेदांत दर्शन. *हिंदी अनुशीलन*, *15*(2), 23-41.

[9] नगेंद्र. (1965). तुलसी में भारतीय चिंतन. *आलोचना*, *15*, 112-128.

[10] पांडेय, एम. (1995). तुलसी का समय और समाज. *हंस*, *156*, 67-84.

[11] शर्मा, आर. (2010). तुलसीदास के काव्य में उपनिषदीय तत्व. *भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शोध पत्र*, *45*, 156-178.

[12] सिंह, एन. (1985). तुलसी की प्रासंगिकता. *आलोचना*, *48*, 89-106.

[13] त्रिपाठी, ए. (2018). तुलसी काव्य में सांख्य दर्शन के सिद्धांत. *इलाहाबाद विश्वविद्यालय शोध पत्रिका*, *32*(4), 234-251.

Cite this Article:

डॉ० निधि छाबड़ा, "तुलसीदास जी के साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा", *Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), ISSN: 3048-9423 (Online), Volume 1, Issue4, pp. 33-38, Feb-Mar 2025.*

Journal URL: https://nijms.com/

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.